Vol. 11, Issue-1 (January 2022) pp.183-190 Sangeet Galaxy e-Journal [ISSN: 2319-9695]

UGC-CARE enlisted & Indexed in EBSCO International Database of Journals

सितारनवाज़ उस्ताद विलायत खान के पूर्वज: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

नितिन परमार (शोधार्थी)
प्रो.अहमद रजा खान पठान (मार्गदर्शक)
प्रो. गौरांग भावसार (सह-लेखक)
फेकल्टी ऑफ परफार्मिंग आर्ट्स,
द महाराजा सयाजी राव गायकवाड विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात
Email: nsitarboy@gmail.com

सारांश

सितारनवाज़ उस्ताद विलायत खान के पूर्वज राजपूत क्षत्रिय थे और गायन के लिए जाने जाते थे। क्षत्रिय और राजपूत होने अर्थ यह कि वे हिन्दू थे और अवश्य ही पेशे से योद्धा भी थे। उनदिनों की रीत रिवाज के अनुसार वे अवसर काल में विविध कलाओं की चर्चा करते थे। इस परिवार की रुचि संगीत में थी । कारण यह है कि पुराने जमाने में लोग दिनभर के काम धाम से निवृत्त होकर शाम को संध्या आरती के समय लोकयंत्रों को बजाकर भजन गाते थे या उसके बाद मन बहलाने के लिए अपनी पसंद के गाने गाते थे। उनमें से अगर कोई उम्दा गा बजा लेता था तो मुजरा करने के लिए उसे संगीत रसिकों का निमंत्रण भी मिलता था । ऐसे संगीतज्ञ परिवार के लोगों को अपनी विशेष शैली के कारण किसी खास घराने की कलाकार के रूप में ख्याति प्राप्त हुई । विलायत खान साहब का पितृकुल ग्वालियर, इंदौर और आगरा तथा मातृकुल डागर, अतरौली एवं किराना घराने के कलाकारों के साथ जुड़ा हुआ था। वे कलाकार पहले शौकिया यंत्रवादक हुआ करते थे जिनमें सारंगी और सितार मुख्य था । बाद में इन्होंने सितार वादन में ऐसा दर्ज़ा हासिल किया कि वह इटावा घराना नाम से प्रसिद्ध हुआ। चूँकि सितार पर नवीनता लाने में उस्ताद इमदाद खाँ का बहुत बड़ा योगदान था इसलिए वह शैली और उसकी तकनीक इमदादखानी बाज कहलाने लगी । विलायत खान के बुजुर्गों का मूल निवास ग्वालियर के पास नौगाँव नाम की जगह थी जो वहाँ के जमींदार हुआ करते थे। उस्ताद विलायत खाँ के पूर्वज मलूकदास राजपूत वंशज थे। यह अनुमान किया जाता है कि उन्हीं के खानदान में सरोजन सिंह या सुजान सिंह हुए। उनकी तीसरी पीढ़ी में हुए साहबदाद खान जिनके समय से सितार इनके घर में ज्यादा चमकने लगा। इस परिवार में लोगों ने सितार पर इतनी मेहनत की कि साहबदाद का पुत्र इमदाद और पौत्र इनायत सितार वादन के एक बेमिसाल इतिहास बन गए। इन महान व्यक्तियों के बारे में अनेक भ्रांतिमूलक बातें फैली हुई है । हमारे पास उपलब्ध कहानी और किस्सों पर जब युक्ति तर्क के द्वारा विचार किया जाता है तो वह महत्वपूर्ण दस्तावेज़ जैसा बन जाता है। हमने वही विश्लेषणात्मक उपलब्धियाँ इस शोधपरक आलेख मे प्रस्तुत किया है ।

सूचक शब्द:

इमदाद खानी घराना, इटावा घराना, उस्ताद विलायत खान, साहबदाद खान, इमदाद खाँ.

इटावा घराना:

उत्तर प्रदेश में आगरा, कानपुर और ग्वालियर, कन्नौज के बीचों बीच स्थित एक जगह है इटावा[(1)]वहाँ पर एक राजपूत परिवार संगीत में रुचि रखता था। उस राजपूत क्षत्रिय परिवार के सरोजन सिंहके खानदान किसी कारण इस्लाम धर्म स्वीकार किया तथा संगीत को भी आगे बढ़ाया। इस परंपरा के प्रसिद्ध व्यक्ति हुए 1-सरोजन सिंह,2-तुराब खाँ, 3- साहबदाद खाँ,4- इमदाद खाँ, 5- इनायत खाँ, वाहिद खाँ, 6 - विलायत खाँ, इमरत खाँ, खाँ मस्तान, अजीज़ खाँ, 7 - शाहिद परवेज, शुजात खाँ, हिदायत खाँ, निशात खाँ, इरशाद खाँ, आदि। इमदाद खाँ के नाम पर इस परिवार की सितार शैली का नाम पड़ा इमदाद खानी घरानाया इमदादखानी बाज[(2)] और मूल गाँव इटावा होने के कारण इसे इटावा घराना भी कहा जाने लगा।

प्रोफेसर हामिद हुसैन खाँ की पुस्तक 'तालीम सितार या इसरारे हामिद'[(3)] के अनुसार उनके पूर्वज भी इटावा के सितार वादक थे और वह परंपरा प्यार खाँ के शागिर्द सँवलिया खाँ से शुरू हुई थी। उनके भाई थे पीर खाँ और तीन पुत्र थे इज्जत खान, तुल्लन खाँ और तुराब खान। तुराब खाँ के पुत्र हुए रहमत खाँ एवं तुल्लन खाँ के पुत्र किताब के लेखक हामिद हुसैन।

उस्तादइमदाद खाँ (1848-1920) ने अपनी वादन शैली में अलग तरीके से झाला बजाने का विकास किया। इमदाद खाँ से शुरू हुई गायकी अंग जिसमें मींड़, कण, घसीट आदि के उपयोग से आलाप में चैनदारी आई और रंजकता बढ़ी। उनकी अपनी वादन शैली एवं शिष्य परंपरा से सितार की लोकप्रियता और प्रतिष्ठा भी बढ़ी। लोग यह कहते हैं कि इमदाद खाँ साहब के पुत्र उस्ताद इनायत खाँ नेसितार वाद्य में सर्व प्रथम तरबे लगाई,जिससे सितार की आवाज में मधुरता और रंजकता और बढ़ गई परंतु 93 साल उम्र के पंडित अरविन्द पारिख जी ने 17 मार्च 2021 को शोधकर्ता के पूछने पर यह वार्ता भेजा कि "मैंने इमदाद खाँ साहब के सुरबहार और इनायत खाँ साहब के सितार में तरबें देखी है। हमारे घराने के मूर्धन्य कलाकार यह मानते हैं कि (सितार पर) इमदाद खाँ के पिताजी साहबदाद खाँ ने तरबें जोड़ी। लेकिन इस बात को लेकर ज्यादा परेशान मत होइए।"

सितार वादन में ख्याल की मुरकी का प्रयोग करना इनायत खाँ साहब ने शुरू किया। उनकी सुरबहार में पूरे सप्तक की मींड़ और सितार में 3-4 सुर की मींड़ सुनाई देती है। उन्होने तान और तोड़े के साथ तिहाई बजाना शुरू किया। उनके सपाट तानों में एक बोल- एक सुर का सिद्धांत प्रतिफलित होता है।[(4)]

उस्ताद विलायत खाँ के पूर्वजों की सांगीतिक पृष्ठभूमि:

उस्ताद विलायत खाँ के पूर्वज सहारनपुर के थे। खाँ साहब खुद कहते हैं कि "सहारनपुर में तो मेरे बाप-दादा-नाना रहते थे।" [(5)] विलायत खाँ साहब कहते हैं, "....दरअसल हम लोग उत्तरप्रदेशके हैं।.... " नौ गाँव के राजपूत जागीरदार ठाकुर सुजान सिंह ध्रुपद गायक के रूप में जाने जाते थे।[(6)]

उस्ताद विलायत खाँ साहब एक गुफ़्तगू के रिकार्ड में कहते हैं कि वे इटावा के हैं जबकि उनका मूल निवास इंदौर और रतलाम के बीच में स्थित नौगाँव रहा है।[(7)] नौगाँव को गूगल मानचित्र में ढूँढ़ने पर यह इंदौर के पास धार में दिखाई देता है।

विलायत खाँ साहब के पूर्वज बांग्लादेश के राजशाही जिले के एक नामचीन विभाग नौगाँव के आदि निवासी थे ।[8] यह बात इसलिए स्वीकार्य नहीं है क्योंकि पूर्वी बंगाल के क्षत्रिय जाति के लोगों के नाम से पहले ठाकुर कभी भी नहीं लगाया जाता है । ब्राह्मणों को छोड़कर किसी भी खत्री के नाम से पहले ठाकुर लगाना उत्तर भारत की रीत रिवाज है ।

15 फरवरी 2021 को जब उस्ताद शुजात खाँ (पुत्र उस्ताद विलायत खान, पौत्र उस्ताद इनायत खान, प्रपौत्र उस्ताद इमदाद खान) के साथ जब शोधकर्ता की फोन पर बात हुई तो उन्होंने बताया कि उनके पूर्वज उत्तर प्रदेश या राजस्थान से हो सकते हैं लेकिन बंगाल से नहीं, जबकि शुजात खाँ की माँ स्वयं बंगाली रही हैं ।

विलायत खाँ साहब उसी रिकार्ड में यह कहते हैं कि उनके खानदान के साथ अम्बेठा, किराना, अतरौली, छपरौली, सहारनपुर, इटावा के साथ रिश्तेदारी रही है। सहारनपुर- अम्बेठा के डागुर बानी ध्रुपद गानेवाले थे बेहराम या बैराम खान। उनके पुत्र हुए अब्बन खान। अब्बन खान की बहन की बेटी के साथ (भाँजी) बन्दे हसन की शादी हुई। मतलब यह हुआ कि विलायत खान साहब की नानी बेहराम खान साहब की पोती. नवासी थीं ।

लोग यह मानते हैं कि किराना घराने के बीनकार बंदे अली खान ग्वालियर के उस्ताद हद्दू खान के बड़े दामाद थे परन्तु सच में वह हद्दू खान के चचेरा भाई नत्थे . नत्थू खान के दामाद थे।[9],[10] बन्दे अली उस्ताद बेहराम खान के भी रिश्तेदार थे । बन्दे अली साहब की दो बेटियों की शादी अल्लाबन्दे और जाकिरुद्दीन डागुर से हुई। इन दोनों की माँ ग्वालियरवाले नत्थे खान की दूसरी बेटी थीं और मुहम्मद जान खान की पत्नी थी । मुहम्मद जान हैदर खान के पुत्र थे। हैदर खान बेहराम खान के छोटे भाई थे। नत्थे खान के चचेरे भाई हस्सू –हद्दू खान (हैदर बख्श, हुसैन बख्श[11]) जो ग्वालियर घराने के सबसे मशहूर गायक थे उनसे उस्ताद विलायत खान के परदादा साहबदाद खान की दो बूआ/फूफी की शादी हुई थी।[12]

“यहाँ उन्होंने दो किस्से सुनाये हैं। उनकी माँ बशीरन बेगम के पिता थे बंदे हसन खाँ । बंदे हसन के भाई थे महबूब अली खाँ । कहते हैं कि इनके वालिद इलाही बख्श खान मंगोलिया से आए। उन्हे ब्रिटिश का साथ देना पड़ता था । महबूब अली सात फीट कद के तगड़े इन्सान थे और ब्लू रंग के सलवार, कमीज, साफा बांधते थे। वे शायद डकैत मानसिंह के सहयोगी थे और धौलपुर, शिवपुर, मुरैना, चम्बल में उनकी बड़ी धाक थी ।

खान साहब 1934 की जिक्र करते हुए कहते हैं कि उस समय वे बच्चे थे और नाहन रियासत में गए हुए थे क्योंकि वहीं उनके नाना दरबारी कलाकार थे । बंदे हसन साहब को इज्जत से नाहन के प्रधान मन्त्री से भी ऊँचे आसन पर बिठाया जाता था। उनकी याद के अनुसार रौबदार दिखनेवाले उनके नाना महबूब अली की दोनों आँखे अलग अलग सीध में थी क्योंकि भाले की चोट से बहुत बड़ा जख्म हो गया था। उनके नाना ने भाई से कहा कि राजगुरु होने के नाते वहाँ उनकी बहुत इज्जत है अतः वह वहाँ आइन्दा न आया करें। यह सुनकर महबूब अली वहाँ कभी भी लौट कर न आए ।

उनके पूर्वज सरोजन सिंह तलवार लेकर महाराणा प्रताप के पास पहुंचे और कहा कि महाराणा के सैनिकों ने उनकी ज़मीन पर कब्जा कर लिया है । चूँकि वह खुद आन्धावाली गोत्र के राजपूत हैं और महाराणा भी राजपूत हैं इसलिए वे तलवार लेकर पहुंचे हैं ताकि कोई यह न कह दें कि सरोजन सिंह अपनी ज़मीन की भीख माँगने आया हुआ है ।

... कहने का तात्पर्य यह कि वे अपनी हक की ज़मीन पाना चाहते थे।"[13] शोधकर्ता के अनुसार यह मनगढ़न्त कहानी लगती है क्योंकि महाराणा प्रताप (1540-1597) 16 वीं सदी के प्रसिद्ध योद्धा थे। अगर साहबदाद खाँ का जन्म 1825-30 माना जाय तो उनके दादा सरोजन सिंह का जन्म किसी भी हालत में 18 वीं सदी से पहले नहीं हो सकता। जिस कारण से राणा प्रताप के साथ सरोजन सिंह का भेंट नहीं हो सकता।

ठाकुर सरोजन सिंह या सुजान सिंह:

उस्ताद विलायत खाँ के पूर्वज मलूकदास राजपूत वंशज थे। सिंह पदवीं ज्यादातर क्षत्रियों और सिक्खों की पदवीं होती है और इसका प्रयोग राजस्थान, पंजाब, उत्तर प्रदेश एवं बिहार में अधिक होता है। बंगाल में यह पदवीं सिंह (शिंग-हो), सिन्हा तथा शी, महाराष्ट्र तथा सिंग में बदल जाती है और गुजरात में यह सिंह भी हो जाती है। बंगाल में सिंह पदवी वाले लोगों की संख्या उतना ज्यादा नहीं है जितना कि उत्तर भारत में है। उत्तर पश्चिम भारत में क्षत्रिय ही खत्री हो जाती है।

खानदानी कलाकार जैसे दिल्ली घराने के गायक फरीद हसन खाँ और मुंबई के सितार वादक सिराज़ खाँ (आदि निवास इंदौर) के साथ बातचीत के दौरान यह पता लगा कि जो व्यक्ति ब्राह्मण और क्षत्रिय जाति से मुसलमान बने हैं ऐसे कलाकार अपनी शादी व्याह उन्ही लोगों के साथ करते हैं जिनका धर्म परिवर्तन ऊंची जात से ही हुआ है। अगर उस्ताद विलायत खाँ साहब के पूर्वज खत्री मुसलमान न होते तो उनके दादा के दादा तुराब खाँ की बहनों के साथ ग्वालियर के हस्सू खाँ हद्दू खाँ (पूर्वज हुसैनपुर गाँव के निवासी थे) की शादी नहीं होती क्योंकि वे भी बहुत ऊंचे खानदान के कलाकार थे जो पहलवानी, तलवारबाजीऔर हिम्मती होने के लिए भी जाने जाते थे। सहारनपुर के संदर्भ में यह कहना उचित होगा कि "विलायत खाँ के पूर्वज मलूकदास के वंशज राजपूत थे।"[14]

कुछ लोग सुजान सिंह के बेटे का नाम हददु सिंह बताते है ।लगता है कि हद्दू सिंह के बचपन में ही पूरा परिवार मुसलमान धर्म स्वीकार कर लिया था और हद्दू सिंह का नया नाम हुआ था तुराब खाँ। पण्डित अरविन्द पारिख जी के अनुसार सरोजन सिंह का बदला हुआ नाम था मियांदाद खान।[15]

Hans utter की शोध के अनुसार सुजान सिंह के बेटे तुराब खाँ (हद्दू सिंह) आगरा में आकर रहने लगे।। इसी सिलसिले में यह कहना मुनासिब होगा कि "गवैया मलूकदास का नाम जटाधारी गुसाईयों में आता है और उन्हीं की संगीत विरासत में हाजी सुजान खाँ का नाम आता है जो हिन्दू नौहार राजपूत खानदान के पहला मुसलमान कलाकार थे।"[16] हो न हो कि उस्ताद विलायत खाँ के पूर्वज भी यही मलूकदास और सुजान सिंह हैं क्योंकि उन्होंने अपने एक गुफ़्तगू में आगरा घराने के साथ उनके खानदान के सम्बन्ध पर इशारा किया है। इनके समय में भी काफी मेलजोल दिखाई पड़ता है।

साहबदाद खाँ (1825-1880):

"साहबदाद की बूआ ग्वालियर के हद्दू-हस्सू खाँ नामक प्रसिद्ध ख्यालियों को ब्याही थीं और ससुराल में आते समय अपने साथ केवल साहबदाद को लाई थीं।"[17] यह बात सामान्य और स्वाभाविक इसलिए लगता है क्योंकि आगरा से ग्वालियर की दूरी 120 किमी के आसपास है और सुजान सिंह भी गाने बजानेवाले थे।

थोड़ा हिसाब किया जाए तो यह मिलता है कि हस्सू हद्दू खाँ का जन्म[18] आनुमानिक 1805-1815 के बीच हुआ था। उनके नाना नत्थन पीरबक्श का जन्म इस समय काल से करीब 50 साल पहले 1760 में हुआ होगा[19] क्योंकि उनके नामचीन शागिर्द आगरा के घग्घे खुदबख्श का जन्म 1790-1798 का माना जाता है। इमदाद खाँ का जन्म 1848 में हुआ यानि हम यह मान सकते हैं कि उनके वालिद साहबदाद खाँ का जन्म 1825 के आसपास हुआ होगा (ऑक्सफोर्ड एनसाइक्लोपीडिया में c.1830 दिया है)। साहबदाद के पिता तुराब खाँ का जन्म इसी प्रकार 1800 के आसपास और उनकी बुआ का जन्म 1810-1820 के बीच ठहरता है। साहबदाद का एक दूसरा नाम था साहब सिंह।

ऊपर के विवरण से यह साबित होता है कि साहबदाद खाँ एक आनुवंशिक संगीतकार परिवार के थे और वे गायन सीखे थे तथा स्वयं गाते भी थे। यह हो सकता है कि अपनी गायन कला को अधिक समृद्ध और दमदार बनाने का गुप्त उद्देश्य मन में लेकर वे अपनी बुआ के साथ ग्वालियर गए होंगे। अगर हद्दू हस्सू खाँ की शादी 1830 -40 के दौरान हुई होगी तो उस समय साहबदाद खाँ 15 वर्ष के आसपास रहे होंगे और संगीत के मामले में समझदारी भी आ गई होगी।

"एकबार हद्दू-हस्सू खाँ जब बाहर गए हुए थे, साहबदाद उनके चुराए हुए, रियाज़ के कुछ अंश का अभ्यास कर रहे थे। जब दोनों भाई घर वापिस आए और साहबदाद को अपने गायन तथा तानों को प्रस्तुत करते देखा तो क्रोधित हो उठे। हस्सू खाँ बड़े तेज मिजाज़ के थे और साहबदाद को जान से मार डालने पर उतारू होने लगे, तो हद्दू खाँ ने उन्हें रोककर कहा कि ठहरो, जब इसने इतने दिन से सीखा है तो कुछ तालीम इसे और देकर यहाँ से निकाल देना चाहिए ताकि हल्का फुल्का, अधकचरा गायन जनता में प्रस्तुत करके यह हमारी इज़्ज़त में बट्टा न लगाए।

"अंततोगत्वा दोनों भाइयों ने साहबदाद को कुछ दिन और तालीम देकर घर से निकाल दिया। इसके पश्चात साहबदाद ने बीनकार निर्मल शाह तथा मियां मौज से दीक्षा ली।" निर्मल शाह का समय ऑक्सफोर्ड एनसाइक्लोपीडिया के अनुसार अंदाजन 1760 से 1830 का है। वर्ष का हिसाब ध्यान में रखते हैं तो 1825.30 जन्म प्राप्त साहबदाद खाँ की निर्मल शाह से तालीम पाना असंभव लगता है।

तुराब खाँ के बेटे साहबदाद आगरा से निकलकर 50-60 किमी दूर इटावा के एक गाँव में जाकर रहने लगे।[20] साहबदाद अपने जमाने में गायक के रूप में प्रसिद्ध थे। वे सारंगी के एक मंजे हुए कलाकार थे और जलतरंग बजाते थे। कहीं कहीं उन्हें एक शौकिया सितार वादक के रूप में उल्लेख किया जाता है।

विलायतखानी घराने के लोग साहबदाद को सुरबहार का आविष्कारकर्ता मानते हैं। वे यह भी मानते हैं कि साहबदाद खाँ ही सितार में पहलीबार तरब का तार लगाया। हालांकि Allyn Miner के अनुसार इसका श्रेय ग़ुलाम मुहम्मद को जाना चाहिए। इसलिए यह बात में भी विवाद साबित होता है कि सितार में पहली बार चिकारी और तरब के तार लगानेवाले इमदाद खाँ या इनायत खाँ थे; ऐसी बातें अधिकतर वर्तमानके भारतीय शोधकर्ताओं ने अपनी प्रकाशित किताबों में लिखी है। इमदादखान, इनायत-वहीद खान, विलायत-इमरत खाँ की सुप्रसिद्ध तस्वीर को गौर से देखने पर पता लगता है कि इमदाद खाँ के सितार और सुरबहार में तरब के तार हैं।

यह माना जाता है कि साहबदाद खाँ अपनी खानदानी गायकों की परंपरा से हटकर अपना ध्यान यंत्र वादन की तरफ ज्यादा केंद्रित किया और यही तकनीक दूसरों को भी सिखाई।[21] उस जमाने में सभी यंत्रों में ध्रुपद के अंदाज

से तंत्रकारी बाज बजता था। चूँकि साहबदाद ने हस्सू हद्दू खाँ से ख्याल सीखा था इसलिए यह अनुमान किया जा सकता है कि उनके सितार में ख्याल अंग बजाया जाता होगा। साहबदाद खाँ ग्वालियर दरबार में सारंगी वादक के रूप में नौकरी करते थे और हद्दू-हस्सू खाँ के साथ सारंगी की संगत करते थे।[(22)]

उनदिनों ध्रुपद अंग की गायकी यंत्रों पर बजाना एक आम बात थी, लेकिन 1945 के आसपास उस्ताद विलायत खाँ जिस गायकी अंग की बात करते थे उसका सूत्रपात शायद साहबदाद खाँ से ही हुआ होगा। साहबदाद खाँ से पहले पूरे भारत में सितारनवाज़ के रूप में फिरोज खाँ अदारंग (दिल्ली,1700-1770), मसीत खाँ 1730-1800)[(23)], ग़ुलाम रज़ा खाँ (लखनऊ, 1800- 1865), रहीम सेन (1785-1850), अमृत सेन (1813-1893, जयपुर), आदि प्रसिद्ध हुए।

उपसंहार:

भारतीय संगीत इतिहास अध्ययन करने पर सितार वादकों में पहला महत्वपूर्ण उल्लेख मिलता है फिरोज खान के विषय में, जो ख्याल गायकी में अदारंग नाम से प्रसिद्ध है। सितार गतों के लिए ज्यादा मशहूर हुए मसीत खान और गुलाम रजा खान। जबकि उस्ताद विलायत खान के बुजुर्गों की सितार की तालीम इन लोगों के पास नहीं हुई। परन्तु वे किसी न किसी कलावंत से सितार सीखे जरूर होंगे।

बिमलाकान्त रायचौधुरी के संगीत कोश से यह पता लगता है कि विलायत खान के परदादा साहबदाद खान को सेनिया घराने के प्रसिद्ध बीनकार निर्मल शाह से तालीम मिली थी। यह अनुमान है कि उनसे साहबदाद खान को गायन के साथ साथ सितार की भी तालीम मिली थी। निर्मल शाह के पिता थे जीवन शाह और दादा भूपत खान मनरंग। भूपत खान की बहनोई थे फिरोज खान अदारंग।

भूपत खान के पिता थे बीनकार गायक न्यामत खान सदारंग जो दिल्ली के वादशाह मुहम्मद शाह रँगीले (1719-1748) के दरबारी कलाकार थे। । अतः यह आश्चर्य नहीं है कि भूपत खान तथा उनकी बादnवाली पीढ़ी के कलाकार गायन के साथ साथ वीणा और सितार भी बजाते थे। उस समय काल में ध्रुपद के आदर्श पर तन्त्र अंग की कलावंती वादन शैली प्रचलित थी। साहबदाद खान से शुरू हुई सितार परंपरा इमदाद खान – इनायत खान-विलायत खान फैलती गई।

इस शोधपत्र से यह पता चलता है कि उस्ताद विलायत खान ने एक रिकार्ड में विस्तार से बताया है कि उनके पूर्वज वे गायक वादक होने के साथ साथ राजपूत शूरवीर और डकैत भी हुआ करते थे और यह इतिहास किसी पूर्व शोधकर्ता के हाथ न आया। वे ऊँचे कुलीन वंश के संगीतकार होने के नाते उनके पूर्वजों की रिश्तेदारी उस युग की चोटी के कलाकारों से हुई। उनका घराना ध्रुपद गायन शैली से सितार वादन की तरफ मुड़ा और ख्याल गायन को सितार पर अपनाया, जिसे अखिल भारतीय स्तर पर सबसे प्रामाणिक और प्रभावी सितार शैली के रूप में मान्यता मिली। इस तरह नौगाँव से चलकर इटावा तक आते आते उनका घराना सितार का सबसे मशहूर बाज बन गया।

बीसवीं सदी में गायकी अंग के सितार वादकों में सबसे मशहूर हुए उस्ताद विलायत खान क्योंकि यह बाज उन्ही की ईजाद थी। ऐसे तो प्रायः सभी फनकार गायन की नकल में अपना साज़ बजाया करते हैं जिसमें वे ध्रुपद, खयाल या लोकगीत बजाते हैं। रागदारी संगीत के लिए लोगों की रुझान ध्रुपद के आदर्श की तरफ थी। इसे

तंत्रकारी अंग कहा जाता था। इसमें गत और तोड़े ज्यादा बजाए जाते थे, परन्तु आधुनिक गायकी अंग अलग था। गायकी अंग के सितार वादन में मध्य या द्रुत लय के ख्याल की बन्दिश, ठुमरी, तान ज्यादा बजने लगी। गायन में जैसा सुर का भराव होता है, विलायत खान साहब ने अभिनव प्रयोग कर गायकी अंग को सितार पर उतारा. इस प्रकार इमदाद खाँ से शुरू हुई गायकी अंग में मींड़, कण, घसीट आदि के प्रयोग से केवल आलापहीन गतकारी में भी में चैनदारी आई और रंजकता बढ़ी।

संदर्भ सूची:

(1)https:..www.google.com.maps.place.Etawah,+Uttar+Pradesh.@26.7168005,77.9271275,8z.data=!4m5!3m4!1s0x3975dfd884cf6219:0xb538c7e9e5e6e2d9!8m2!3d26.8458148!4d79.1096901

(2) रॉयचौधुरी, बिमलाकांत.भारतीय सङ्गीत कोश.पृ. 202-3

(3) भटनागर, रजनी.सितार वादन की शैलियाँ (सितार वादन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि).पृ.180

(4) https:..nadsadhna.com.indian-music.sitar-gharanas.vilayatkhani-itawa-gharana.

(5) बनर्जी, मीना. *कोमल गांधार उस्ताद विलायत खान*. पृ. 78

(6) बनर्जी, मीना. *कोमल गांधार उस्ताद विलायत खान*. पृ. 60

(7) https:..youtu.be.zVbaKSsFGF4

(8) Utter, Hans. Networks of Music and History: Vilayat Khan and the Emerging Sitar(thesis)p. 162

(9) गर्ग, लक्ष्मीनारायण.*हमारे संगीत रत्न*.पृ. 470

(10) संगोराम, श्रीरंग. *मुक्तसंगीत संवाद*.पृ. 85

(11) खान, मोहम्मद सईद.*संगीत के जवाहरात*.पृ. 55

(12) गर्ग, लक्ष्मी नारायण.*हमारे संगीत रत्न*.पृ. 431

(13) https:..youtu.be.zVbaKSsFGF4

(14) गर्ग, लक्ष्मी नारायण.*हमारे संगीत रत्न*.पृ. 510

(15) रामकृष्ण दास (पण्डित अरविन्द पारीख जी ने तालीम के दौरान 4 अप्रैल, 2006 को रामकृष्ण दास को बताया था।). साक्षात्कार. ता. 3दिसंबर, 2020

(16) मुखर्जी, कुमार प्रसाद.*कुदरत रंग बिरंगी*.पृ 287

(17) गर्ग, लक्ष्मी नारायण.*हमारे संगीत रत्न*.पृ. 431-32

(18) संगोराम, श्रीरंग.*मुक्तसंगीत संवाद*.पृ.85

(19) The Oxford Encyclopaedia of the Music of India. पृ 741

(20) Utter, Hans. Networks of Music and History: Vilayat Khan and the Emerging Sitar (theses).p 162

(21) Utter, Hans. Networks of Music and History: Vilayat Khan and the Emerging Sitar (theses).p 171

(22) The Oxford Encyclopaedia of the Music of India. पृ 439

(23) The Oxford Encyclopaedia of the Music of India. पृ 655

संदर्भग्रंथ सूची:

1. रॉयचौधुरी, बिमलाकांत. *भारतीय सङ्गीत कोश*. भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली.1975
2. भटनागर, रजनी.*सितार वादन की शैलियाँ(सितार वादन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि)*.कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली. 2014
3. गर्ग, लक्ष्मी नारायण. *हमारे संगीत रत्न*. संगीत कार्यालय, हाथरस.1957
4. संगोराम, श्रीरंग.*मुक्त संगीत संवाद*. गान वर्धन संस्था, पुणे.1995
5. खान, मोहम्मद सईद.*संगीत के जवाहरात*. वाणी प्रकाशन, दिल्ली.2008
6. Utter, Hans. Networks of Music and History: Vilayat Khan and the Emerging Sitar(Thesis).The Ohio State University.2011
7. The Oxford Encyclopaedia of the Music of India. Oxford University Press, New Delhi.2012
8. बनर्जी, मीना.*कोमल गांधार उस्ताद विलायत खान*. कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली.2005
9. मुखर्जी, कुमार प्रसाद.*कुदरत रंग बिरंगी*.राज कमाल प्रकाशन.2002

Internet साइट:

1.https:..www.google.com.maps.place.Etawah,+Uttar+Pradesh.@26.7168005,77.9271275,8z.data=!4m5!3m4!1s0x3975dfd884cf6219:0xb538c7e9e5e6e2d9!8m2!3d26.8458148!4d79.1096901

2. https:..nadsadhna.com.indian-music.sitar-gharanas.vilayatkhani-itawa-gharana.

साक्षात्कार

1. रामकृष्ण दास.03-12-2020. टेलीफोन
2. अरविन्द पारिख.17-03-2021. टेलीफोन